तर्ज- खुदा भी आसमां से जब जिमीं पर

उल्ट माशूक हुए आशिक,ये उनकी ही नज़ाकत है
मिले वोहि नज़र लेकर,ये उनकी ही सदाकत है

1- करी मुलाकात अपनों से,अर्स लज्ज़त को भर भर के
अर्श दिल कर दिया मोमिन,जाहेर बातून कर कर के
कदम बसते जहां उनके,रुहों की वोहि खिलवत है

2- कायम सुख के हैं हम मालिक,वो सुख कुछ और ढंग का है
जुबां से न ब्यां होगा,वो सुख कुछ और रंग का है
बदलते हाल पल पल में,धाम की ये हकीकत है

3- कि हर इक आंख में बसता,समुंद्र मयकशी गहरा
नशा इत भी नशा उत भी,नशे का ही है हर चेहरा
पिया की मस्ती का आलम,यहीं अपनी न्यामत है

4- आंख ने आंख में झांका,तो चुपके से इश्क टपका
हुआ बेहाल वो लम्हा,नजारा देख कर सबका
तो मयखाना उछल आया,यहीं उनकी शनाख्त है

Nijanand App